चाहत के वीरां
सागर
में
अनु प्रांजल

Copyright © 2019, Anu Pranjal
All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval system now known or to be invented, without permission in writing from the publisher, except by a reviewer who wishes to quote brief passages in connection with a review written for inclusion in a magazine, newspaper or broadcast.

Published in India by Prowess Publishing,
YRK Towers, Thadikara Swamy Koil St, Alandur,
Chennai, Tamil Nadu 600016

ISBN: 978-93-89097-78-8
eISBN: 978-93-89097-79-5

Library of Congress Cataloging in Publication

# सिलसिला

पहलू में तुम्हारे
झूम कर बरसा सावन
मंज़िलों की आरज़ू में
आवाज़ तो दे दे
तेरी गली में आए
तुमने तो जलाया ना होता
वो लम्हे अधूरे
बहुत दिनों की बात हुई
गिला
ख्वाब भी सूखे हैं
तुम्हीं तो लाए थे मुझको
इक रात सुहानी बीत रही
Chahat ke Veeraan Saagar Mein
आज़माईश
आवारगी
कुछ कुछ सफर तो हो
कशिश रहने दो
उलझन
फितरत नहीं बदली
उम्मीद
मेरा रास्ता होगा
इंतकाम
कुछ और हमारा रिश्ता है
अधूरी कहानी
कहीं तूफां ना आ जाये

साजिश नहीं होती
दो अल्फ़ाज़

# पहलू में तुम्हारे

पहलू में तुम्हारे हमें कई माहताब मिले
पर वीरान हैं वो गलियां जिनमे हमें आप मिले
खुशियाँ तो खुशियाँ, गम भी बेगाने थे
तुमसे ज़्यादा बेवफा सारे दोस्त-अहबाब मिले
थी शोर से सराबोर, पर सूनी महफ़िलें
हर अजनबी से हम आज बेहिजाब मिले
फिर भी ए सनम तुम्हें दुआएं हैं मेरी
हर मोड ज़िंदगी में तुम्हें खुशियों का शबाब मिले
न वक़्त आए वो फिर कि तुमसे मिलें हम
और गर मिलें भी तुमसे तो बे-रुबाब मिलें
कि मिलना तो है, आखिर शुक्रगुजार हैं तुम्हारे
तुमसे हमें जाने कितने बेरहम से ख्वाब मिले !!

* * *

# झूम कर बरसा सावन

झूम कर बरसा सावन
पर हम इक बादल को तरसे
हम भी कैसे पागल हैं
जाके किस पागल को तरसे
फ़लक बे-इंतेहा मिला
हम पर छाने के लिए
पर आँसू छुपाने को
हम इक आँचल को तरसे
सूनी हो गई आँखें
इतना किया इंतज़ार तेरा
हम बेबस-बेचारे,
दो नैन भर काजल को तरसे
जो दे सुकून इस दिल को, घड़ी दो घड़ी के लिए
हम ता-उम्र, पल-पल, उस पल को तरसे
बागों में बहार आई
झूम उठे पर्वत औ’ नदियां

हम ठहरे दीवाने
इक सूखे पीपल को तरसे ..... !

✸ ✸ ✸

# मंज़िलों की आरज़ू में

मंज़िलों की आरज़ू में
रास्ते मिल जाएँगे
मझधार में ढूंढने पर
किनारे मिलते नहीं
तन्हाईयां जो घेरें
तो शिकवा ना करना
खामोश मुसाफिरों को
सहारे मिलते नहीं
ये भी इक दस्तूर है
जमाने के करीनों में
कुछ हम-जुबां मिल जाएंगे,
मगर सारे मिलते नहीं
मिले हैं इस मोड़ पर हम,
रास्तों के मिलने पर
मिल चुके हैं ख्याल मगर,
ख्वाब हमारे मिलते नहीं !!

* * *

**You’ve Just Finished your Free Sample**

**Enjoyed the preview?**

**Buy: https://store.prowesspub.com**